Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 06, (नवंबर, 2024)
पृष्ठ संख्या 08–10

नवजात पशु बच्चों की देखभाल

आशुतोष कमल[1], वीकेश कुमार[2] एवं आनन्द कुमार[3],
[1]शोध छात्र, पशुपालन एवं दुग्ध विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
[2,3]पी0एच0डी0 शोध छात्र, पशुपालन एवं दुग्ध विभाग,
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।
Email Id: – ashutoshkamal.bhu@gmail.com

नवजात बच्चों में मृत्युदर 60 प्रतिशत से अधिक होती है। अगर बच्चे की देखभाल समय से न हो तो यह दर अधिक हो सकती है। अच्छे व स्वस्थ नवजात बच्चे तभी पैदा होगें जब गाय अच्छी नस्ल की, स्वस्थ तथा अच्छे बैल से क्रॉस की गई हो। यदि ऐसा किसान भाई ध्यान नही देते है तो उन्हे दुर्बल और कमजोर तथा कम उत्पादकता के पशु बच्चे प्राप्त होंगे, विभिन्न कारणों से वयस्क पशु बच्चों की मृत्यु हो जाती है। अतः कृषक भाईयों गाय को क्रॉस करने से लेकर बच्चे के जन्म के 6 माह तक अच्छा रख रखाव करना चाहिए।

1. **बच्चों की सफाई–** नवजात के पैदा होने के तुरन्त बाद ही उसे भूसे की बोरी या जूट की बोरी से सही से साफ कर दें। ऑख, नाक, कान तथा जनन अंगो को अच्छे से साफ करना चाहिए, जिससे नवजात को देखने और सॉस लेने जैसी सामान्य क्रिया करने में परेशानी का सामना न करना पड़े। साफ करने के बाद बच्चे को उसकी मॉ के सामने रखना चाहिए जिससे गाय बच्चे को चाट–चाट के साफ कर दे, यदि कोई गाय अपने नवजात को नही चाट रही है तो नवजात के ऊपर हल्का सेंध नमक डाल देना चाहिए और गाय को चाटने देना चाहिए।

2. **श्वास प्रक्रिया की जॉच करना**–कभी कभी नवजात बच्चे की नाक में गन्दगी जमी होने से एक झिल्ली बन जाती है जिससे नवजात को श्वास लेने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। जन्म के तुरन्त बाद बच्चे की नाक की सफाई कर देनी चाहिए तथा इस झिल्ली को हटा देना चाहिए। कभी कभी बच्चे की श्वास रूक जाती है ऐसे में नवजात को कृत्रिम विधि से श्वास दिलाना चाहिए जैसे नवजात की जीभ को बाहर खींचना चाहिए, तथा बच्चे को जूट की बोरी पर लिटा कर उसकी अगली टांगो को आगे–पीछे खींचना चाहिए, सीने को थपथपाना चाहिए तथा नवजात को थोड़ा ऊपर उठा कर पटक देना चाहिए जिससे नवजात की श्वास प्रक्रिया को सामान्य किया जा सकता है।

3. **नवजात की सूँड/नाल काटना–** श्वास प्रक्रिया की जॉच के बाद बच्चे की नाल को साफ तथा तेज जीवाणु रहित कैची से 7–10 सेन्टीमीटर छोड़ते हुए काट देना चाहिए। कटे हुए नाल का टिंक्चर आयोडीन लगा देना चाहिए। यदि किसी कारणवश टिंक्चर आयोडीन न हो तो उसकी जगह सरसों के तेल में देशी शराब मिलाकर लगाना चाहिए। नाल पर कीटाणु का प्रभाव अधिक होता है। अतः नाल का उपर्युक्त दबाइयों से उपचार करना अति आवश्यक है। ऐसा 3 से 4 दिन तक करना चाहिए। सामान्यता सूँड/नाल 4 दिनों में सूख जाती है।

4. **खुर साफ करना–** नवजात बच्चे में सामान्यता स्वस्थ खुर जन्म के समय से ही होते है परन्तु कभी कभी खुरो के बीच में फैटी बॉडीज जमा रहती है जो पीले रंग की दिखती है, ये मृत रूप में होती है इसमें खून का संचार नही होता है जिसे साफ तेज चाकू से काट कर हटा देना चाहिए ताकि नवजात को अपने पैरो पर खड़ा होने में परेशानी न उठाना पड़े।

5. **नवजात को खड़ा होने में सहायता देना–**गाय का बच्चा यदि स्वस्थ पैदा हुआ है तो व स्वतः पैदा होने के 20–25 मिनट बाद खड़ा होने लगता है। ऐसे समय में उसे खड़े होने में हल्के हाथो से सहायता करनी चाहिए। मगर बच्चे को खड़ा करके उसे पकड़े नही रहना चाहिए अन्यथा उसके पैर कमजोर और नाजुक पड़ सकते है। नवजात को खड़ा करते ही छोड़ दे, बच्चा गिरेगा और फिर उठने का प्रयास करेगा और इसी क्रम में वह स्वयं ही खड़ा होना सीख जायेगा। यदि नवजात किसी कारणवश खड़ा नही हो पा रहा है तो नजदीकी पशु चिकित्सक से उसके पैरो से सम्बन्धित जॉच कराना चाहिए।

6. **प्रतिकूल मौसम में बच्चो की रक्षा करना–**यद्यपि भारत जैसे गर्म देश में बच्चे को सर्दी लगने की संभावना कम ही होती है। फिर भी प्रतिकूल मौसम में नवजात बच्चे को लू, गर्मी व अत्यधिक सर्दी से रक्षा करनी चाहिए। यदि नवजात का जन्म ठण्ड के माह में हुआ हो तो ध्यान रखे की गाय नवजात को अधिक समय तक न चाटे इससे नवजात को ठण्ड लग सकती है। सर्दी लगने से नवजात को ज्वर और निमोनिया की बीमारी हो सकती है। यदि उन दिनों अत्यधिक ठण्ड हो तो पशु और नवजात दोनो को आग के पास खड़ा रखे ताकि उनको ठण्ड से बचाया जा सकें। लू और गर्मी से भी बच्चे और गाय को बचाना अति आवश्यक है। अत्यधिक गर्मी होने पर पशुशाला में पंखे लगाने चाहिए, समय समय पर ताजा पानी की व्यवस्था करनी चाहिए, ध्यान रहे पशुशाला में हवा का आवागमन बना रहे जिसके लिए रोशनदान और खुला परिवेश होना चाहिए।

7. **बच्चे को दूध पीना सीखाना–**गाय के ब्याने के ढाई से 3 घंटे बाद बच्चे को पहला गाय का दूध पिलाना चाहिए। इसके लिए बच्चे को मॉ के थनो के पास ले जाकर उसके मुॅह पर दूध की धार मारते है और अपनी अंगुली में दूध लगाकर बच्चे के मुॅह में लगाते है। इस प्रकार जब बच्चा दूध को चाटेगा तो उसे दूध के स्वाद का ज्ञान होगा। अब बच्चा धीरे धीरे अंगुली को चूसना शुरू करेगा। ऐसा करने पर अंगुली मुॅह से निकालकर धीरे–धीरे थन से दूध की धार बच्चे के मुॅह में मारते रहे और कुछ देर बाद उस बच्चे के मुॅह में थन को दबा दे। ऐसा करने पर बच्चा थन को दवाना शुरू करेगा जिससे दूध उसके मुॅह में जाएगा और बच्चा दूध पीने की कला सीख जायेगा।

8. **बच्चे को खीस पिलाना–**गाय के ब्याने के 2 घंटा बाद ही अच्छे से सफाई कर बच्चे को खींच पिलाना चाहिए। खींच पीने से बच्चे में बीमारियों से लड़ने की क्षमता आ जाती है। बहुत से किसान पशु के जेर डालने का इन्तजार करते है जो सही नही है क्योकि कभी कभी पशु जेर डालने में अत्यधिक समय लगा देती है और ऐसे में बच्चे को ज्यादा देर भूखा नही रक्खा जा सकता बच्चे में अनीमिया होने की संभावना रहती है। नवजात बच्चे का पहला आहार खींस ही होता है, बच्चों को खींस पिलाना अति आवश्यक लाभदायक है क्योकि खींस में पाए जाने वाले मिनरल्स और विटामिन्स तथा रोग प्रतिरोधक वाले लवण अच्छी मात्रा में पाए जाते है। खींस में साधारण दूध की तुलना में 5–6 गुना अधिक प्रोटीन पाया जाता है जो नवजात के शरीर के बढ़वार के लिए अति आवश्यक है। खीस में लौह लवण सामान्य दूध की तुलना में 16 गुना अधिक पाया जाता है जो

नवजात में रक्त बनाने में सहायता करता है खीचं में कैरोटीन पाया जात है जिसे बच्चे में ऑखों के रोग और अंधापन नही होने पाता खींस में रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा प्रतिकारिता जैसें औषधीय गुण पाए जाते है जिससे ये सम्पूर्ण दूध की तरह बच्चे के लिए पूर्ण भोजन होता है।

खीस देने में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है:–

1–बच्चे के शारीरिक वजन के 1/10 ही खींस देना चाहिए।

2–बच्चे के शारीरिक ताप के अनुसार ही खींस को गर्म कर देना चाहिए, जिससे ताप 100 से 102 डिग्री फारेनहाइट होना अच्छा माना जाता है। ठण्डी खींस से दस्त होने की संभावना होती है।

9. **नवजात पशु में टीके लगवाना–** जन्म से छह माह की उम्र तक बच्चे को मुँहपका तथा गलघोटू आदि के टीके वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने से पहले लगवा देना चाहिए। यदि पूर्व में बच्चे की मॉ को टीके लगे है तो बच्चे के जन्म से छह माह तक बच्चे पर इन टीको का असर रहता है। तब इस प्रकार के टीके छह माह के बाद भी वर्षा ऋतु से पहले लगवाये जा सकते है।

10. **नवजात के रहन सहन की व्यवस्था**–नवजात बच्चे को उसकी मॉ के पास ही रखना चाहिए विशेष रूप से वर्षा ऋतु में नमी के सम्पर्क में आने से बच्चों को बचाने के लिए जमीन से एक फुट ऊंचे लकड़ी के कटघरे में रखें। ध्यान रहे की पशुशाला का निर्मण सूखे व ऊंचे स्थान पर हो जहॉ वर्षा के पानी का ठहराव न हो, उचित नाली व्यवस्था होनी चाहिए और रोजाना शेड की सफाई होनी चाहिए ताकि पशु को कीड़े मकोड़ों के प्रकोप से बचाया जा सके। ठण्ड के समय बंद कमरों में बच्चो को रखना चाहिए जिसमें नीचे भूसे की तथा पराली की बिछाली का प्रयोग करना चाहिये।पीने हेतु साफ पानी ही देना चाहिए। कभी कभी बच्चे आपस मे एक दूसरे का शरीर चाटने लगते है। इससे उनके पेट में बाल पहुँच जाते है। जिससे उनको खराब पाचन और दस्त जैसी समस्या हो जाती है जिससे बचने के लिए बच्चे के मुँह में छिक्की/मुचका बॉध देते है। ऐसा 6–10 दिन तक करना चाहिए सामान्यतः नवजात 10 दिन बाद ऐसा करना बंद कर देता है। गर्मी के दिनों में नवजात को प्रतिदिन नहलाना और ब्रुशिंग करना चाहिए। प्रतिदिन एक से दो घंटा व्यायाम भी कराना चाहिए ताकि नवजात बच्चे की शारीरिक बढ़वार अच्छी हो। ध्यान रहे कि पशुशाला के अन्दर उचित वेंटिलेशन हो और गौशाला की दीवारें ऊची हो ताकि जंगली जानवरों से उनका बचाव किया जा सकें।

11. **बछड़े की भोजन व्यवस्था–** जब बछड़ा 15 दिन का हो जाये तो उसे हरा नर्म चारा जैसे बरसीम, लोबिया, लूसर्न, आदि खिलाया जा सकता है। बच्चे धीरे धीरे हरे चारे को बड़े चाव से खाने लगते है क्योकि हरा चारा स्वादिष्ट होता है। साथ–साथ बच्चों को 5 से 10 ग्राम नमक या अन्य खनिज मिश्रण बच्चे के मुँह मे सुबह शाम डाल देना चाहिए ताकि बच्चे हरे चारे को शीघ्र से पचा सकें। जिससे उनके शरीर में खनिज लवणों की मात्रा पूरी की जा सकें जिससे उनकी हड्डियों को मजबूत किया जा सके। धीरे धीरे सूखा चारा भी बच्चो को खिलाना चाहिए। छोटे बच्चों को सर्दियों में तीन–चार बार ताजा पानी पिलाना चाहिए तथा गर्मियों में पांच से छह बार पानी पिलाना चाहिए। एक वर्ष तक के बच्चे को प्रतिदिन 200 से 500 ग्राम दाना तथा एक से डेढ़ वर्ष तक के बच्चों को 1 से 1.5 किलोग्राम दाना खिलाना चाहिए। ?

12. **अन्य–** यदि किसी अन्य कारणवश बच्चे बीमार हो जाये तो उसे नजदीकी पशु चिकित्सक को बुलाकर अवश्य दिखाए ताकि बच्चे को विभिन्न बीमारियों से बचाया जा सके।